International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 1 || January 2017 || PP 102-103

भारतीय राष्ट्रीयवाद के नवीन सूत्र

मेजर राज कमल दीक्षित,
प्राचार्य, सेठ फूल चन्द बागला कालेज, हाथरस।

भारत एक राष्ट्र है। भारत के प्रति समस्त देशवासियों का प्रेम कर्त्तव्य ही भारतीय राष्ट्रीयवाद कहलाता है।

भारत एक विकाशील देश है, जहां अनेक भाषाएँ बोली जाती है परन्तु राष्ट्र भाषा देश की हिन्दी ही है। हमारे देश में अनेक परम्पराएँ, सभ्यताएँ एवं सास्कृतियाँ है, परन्तु परम्पराएँ, सभ्यताएँ एवं सास्कृतियाँ आपस में एक दूसरे में समाहित है जिनका उद्देश्य राष्ट्र की सेवा करना एवं विकास में सतत सहयोग करना है।

कहते हैं कि यदि किसी देश के बारे में जानना हो तो उस देश की सभ्यता संस्कृति एवं भाषा को जानना आवश्यक है क्योंकि हर देश की सभ्यता, संस्कृति के मूल में उस देश का अस्तित्व समाहित है।

वर्षों पूर्व जब विदेशी भारत आये एवं यहां की संस्कृति एवं कला के कायल हो गये थे। धीरे–धीरे उन्होंने अपना साम्राज्य हम भारतीयों पर स्थापित कर लिया एवं वर्षों तक मुस्लिम एवं अंग्रेजी हुकुमत के बाद स्वत्रंता संग्राम के सेनानियों के बलिदान एवं त्याग के फलस्वरूप हम पराधीनता से मुक्त हुए। भारत में हर प्रांत की अलग–अलग संस्कृति है। भारत की जिस प्रांत की संस्कृति एवं परम्पराओं का अध्ययन करना हो तो उस प्रांत की कला को समझना होगा। कला जीवन का सौन्दर्य है। कहते हैं कि कला न हो तो मनुष्य का जीवन नीरस हो जाता है। कला चाहे वह चित्रकला हो या अन्य कोई भी। ये सभी कलाएँ ललित कलाओं के नाम से जानी जाती है। ललित कला में संगीत मूर्ति चित्र एवं वास्तुकला आती हैं। कला का अर्थ है सौन्दर्य, मधुर, कोमल, सुख लाने वाला।1

कला के द्वारा अनेक कार्य सम्पादित किये जाते हैं, जैसे देवताओं की पूजा, अर्चना, धर्म क्रियाकलाप, राष्ट्र, जाति या समाज की सेवा आदि।2

भारतीय विचारकों ने कलाओं के धार्मिक, अध्यात्मिक पक्ष पर बहुत बल दिया है। चित्र सूत्र में कहा गया है कि, कला–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरूषार्थ प्रदान करने वाली होती है।3
विष्णु धर्मोत्तर पुराण में चित्रकला को श्रेष्ठ माना गया है।4
समरांगण सूत्राधार में भी चित्रकला को सारे शिल्पों (कलाओं) में प्रमुख माना गया है।

''चित्र ही सर्व शिल्पानां मुखं लोकश्य च प्रियं''5
चित्रकला द्वारा कलाकार के मन में भावों की अभिव्यक्ति होती है जिस प्रकार भाषा के द्वारा हम अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं और दूसरों तक पहुंचाते हैं उसी प्रकार चित्रकला के द्वारा भी कलाकार अपनी कल्पना को संप्रेषित करता है। कलाकार एक सामाजिक प्राणी है, अन्य प्राणियों की भांति उसे भी अपने समुदाय में रहना और सामुदायिक हतों के प्रति उत्तरदायी होना पड़ता है। सामाजिक हित ही राष्ट्र का हित है। एक कलाकार जो भी कलाकृतियाँ अंकित करता है वे यदि समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी न हों तो कलाकार का कला सृजन व्यर्थ है। कलाओं को सर्वाधिक संरक्षण राज्यों ने ही दिया है। अपनी भव्यता बढ़ाने और गुणों का गान करने हेतु। जिस प्रकार अनेकों देश भक्ति से ओतप्रोत कविताओं एवं गीतों का निर्माण हुआ। उसी प्रकार कलाकारों ने भी प्रभावशाली कलात्मक अभिव्यक्ति करके लोगों के आत्म बल को ऊंचा उठने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्राचीन समय में राजाओं और आश्रयदाताओं के सम्मान और विभिन्न क्रियाकलापों में सभी प्रकार की कलाओं का उपयोग होता था। जन्मोत्सव हो, विवाह हो, राज तिलक हो या किसी भी प्रकार का राज्योत्सव हो सभी अवसरों पर गायन, वादन एवं नर्तन के अलावा चित्रकला के विशेष कार्य किये जाते थे। भवनों को सुंदर प्रतिमाओं तथा चित्रों से अलंकृत करना राज परिवार और दरबार से संबंधित व्यक्तियों की मूर्तियाँ और चित्रों का निर्माण समय–समय पर चित्रकार किया करते थे। अजन्ता की गुफओं में भी इसी प्रकार का सुंदर चित्रण किया गया है। राजकुमार सिदार्थ के जन्म के समय इन्द्र भी उपस्थित रहते हैं।6
शासकों तथा अन्य संरक्षकों के अतिरिक्त राष्ट्र भक्ति पूर्ण कलाकृतियाँ भी निर्मित हुई हैं।
चित्रकला देश के कोने–कोने में समाहित है। चित्रकला जब पहाड़ों से निकली तो पहाड़ी कला के नाम से प्रसिद्ध हुई, मुगलों के आश्रय में पली बढ़ी तो मुगल शैली कहलायी। इसी प्रकार प्रचार होते–होते हर राज्य की अपनी शैली बन गयी। जैसे महाराष्ट्र की वरली, बिहार क्षेत्र की मधुवनी, उड़ीसा के पटचित्र, राज्स्थान की कांगड़ा, बूंदी, मेवाड़ आदि शैलियाँ। इन शैलियों में भारतीय संस्कृति एवं भारतीय अध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं। रामायण, महाभारत कालीन चित्रों में कलाकारों ने भगवान राम एवं महाभारत काल के कुछ प्रसंगो को लेकर अनेक सुंदर चित्रांकन किये हैं। जैसे–राम सीता स्वयंवर, लंका दहन, भरत मिलाप, महाभारत में भगवान कृष्ण का गीता उपदेश, जरासंध वध आदि। भरत के नाट्य शास्त्र, कालीदास के मेघदूत और अभिज्ञानशाकुन्तलम आदि ग्रंथो पर आधारित चित्र रचना देखते ही बनती है। अजन्ता के भित्ती चित्रों में भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित चित्रण किया गया है। जिनमें रेखाओं द्वारा भाव प्रदर्शन एवं सुंदर रंग संयोजन, पशु–पक्षियों का भाव पूर्ण चित्रण, प्रकृति चित्रण, युद्ध एवं वस्त्राभूषणों का चित्रण आदि विश्व प्रसिद्ध हैं। इस

प्रकार पूर्व में जो शासकों एवं राजाओं के चित्र बने उनके लिए किसी देश की विशेषताओं, आकांक्षाओ, दुख–सुख, उल्लास, जन कल्याणकारी कार्यों आदि से संबंधित चित्र जब एक चित्रकार बनाता है तो वह राष्ट्र के प्रति सच्चे प्रेम को दर्शाता है। राष्ट्र की खुशहाली हेतु एक कलाकार को कभी अपना कर्त्तव्य नहीं भूलना चाहिए। मुश्किल समय में राष्ट्र भक्ति का स्वरूप यदि समुचि जनता को हो जाये तो वह अपने राष्ट्र के साथ खड़ा रह सकता है। यह चित्रकार द्वारा ही संभव है। कलाकार देशों के बीच के वैमनस्य को दूर करने में सहायक है क्योंकि कलाकार संपूर्ण मानवता के पुजारी होते हैं। बांग्लादेश का नरसंहार, जापान पर भीषण अणु आयुधों के आक्रमण, दक्षिण अफ्रीका की रंग भेद नीति आदि के प्रति कलाकारों ने सदैव विरोध प्रकट किया है। प्राकृति विपत्तियों की त्रास्दी में मानवता के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की है। फ्रांसिस्को गोया की ''युद्ध की विभिषिका'' पिकासो की ग्वैनिका, हिन्दी कवि नीरज की कविता 'अब युद्ध नहीं होगा' आदि में मानवता की नृशंस हत्या करने वालों के प्रति कठोर और घृणात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त हुई हैं।

गंभीर व पीड़ा के क्षणों के अतिरिक्त कलाओं ने आनन्द और उल्लास के अवसरों पर मानव के साथ ही अभिव्यक्ति दी है। बालकों की क्रीड़ाएँ, युवाओं के प्रेमालाप में कलाओं ने सौन्दर्य द्वारा योगदान दिया है। कलाकार पहले प्राचीन कलाकृतियों की अनुकृति करके उनके मूल तत्वों को हृदयंगम करते हैं और फिर उनकी प्रेरणा से नवीन कृतियों का सृजन करते हैं यही परम्परा है। ''कलाकार स्वतंत्र होकर अपनी परम्परा के अतिरिक्त अन्य प्रभावों का आत्मसात करता चलता है''7

इस प्रकार चित्रकला समुचे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रहने का कार्य करती है। कला में संस्कृति, धर्म, शिक्षा, भाव संस्कार तथा कल्याण आदि विद्यमान रहते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना, देश प्रेम एवं भारत राष्ट्र के प्रति हमारा कर्त्तव्य सुदृढ़ करने में चित्रकला अपनी योगदान देती है। वर्तमान समय में समुचे राष्ट्र में अनेक ज्वलन्त समस्याएँ हैं जैसे– बैरोजगारी, सूखा, भुखमरी, दहेज, बेटी बचाओ, आंतकवाद, भ्रष्टाचार आदि इन समस्याओं को चित्र व पोस्टर के माध्यम से कलाकार जब व्यक्त करता है तो जनता में इन समस्याओं के प्रति जागरूकता आती है। कलाकार जितना इन समस्याओं पर गंभीरता से चिंतन–मनन कर इन्हें चित्र के रूप में प्रस्तुत करता है उतना ही असरकारी प्रभाव समुचे राष्ट्र पर पड़ता है। राष्ट्र की जनता इन समस्याओं से निपटने को आतुर हो उठती है। राष्ट्र की सेवा सिर्फ सेना में भर्ती होने से नहीं होती है बल्कि कला से जुड़कर भी होती है। कलाकार यदि राष्ट्रहित में कार्य करे तो वहीं राष्ट्र के प्रति सच्ची सेवा है।

कला के मूल्यों का विचार जीवन के अन्य मूल्यों से स्वतंत्र होकर करना चाहिए। कहा गया है– ''अच्छी कला मुनष्यों के सुखों में वृद्धि, दलितों के उद्धार, सद्भावना के विस्तार तथा हमारे और विश्व के पारस्परिक संबंधो को सुदृढ़ करने वाली होती है, वह कला भी महान है जिसमें मानवता की अनुभूति होती हो।''

–वाल्टर पेटर

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीयवाद के नवीन सूत्र के रूप में चित्रकला महान कार्य करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, पृ0–1
2. गिर्राज किशोर अग्रवाल, कला निबंध, पृ0 9
3. कलानाम प्रबरं चित्रं धर्मार्थ काम मोक्षदं। – चित्र सूत्र, पृ043/38
4. डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, पृ0–7
5. वही, पृ0 7
6. बुद्ध जन्म का दृश्य, अजन्ता गुफा संख्या–2
7. Rabindranath Tagore on Art and Asthetics, page-61